[श्री अशोक बाकुला]

लद्दाख में कोई विकास हुआ या नहीं इसकी जांच करने के लिए मैं मांग करता हूं कि वहां पर संसद सदस्यों का एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा जाये। पहले भी मैं ने सादिक साहब से इस बात की मांग की थी लेकिन यहां से कोई प्रतिनिधि मण्डल नहीं भेजा गया था। उसका कारण यह था कि अगर प्रतिनिधि मण्डल भेजा जाता तो सारी पोल खुल जाती। इसलिए मैं फिर इस बात की मांग करता हूं कि यहां से एक प्रतिनिधि मण्डल वहां भेजा जाये जो वहां पर जाकर देखे कि क्या स्थिति है। लद्दाख का एरिया बहुत बड़ा है, वहां की तरक्की होनी चाहिए जिसके लिए अभीतक कुछ नहीं हुआ है। मैं अनुरोध करता हूं कि बहुत जल्दी सोच-समझ कर केन्द्रीय सरकार को वहां का शासन अपने हाथ में लेना चाहिए ताकि लद्दाख का विकास होने के साथ-साथ इस देश का भी विकास हो सके।

(II) REPORTED DEATH OF A PERSON AND INJURY TO OTHERS DURING PRACTICE BY N.C.C. IN A VILLAGE IN GUJARAT

कुमारः मणिबेन पटेल (साबरकंठा): अध्यक्ष महोदय, मैं एक दुखद घटना की ओर आपके द्वारा इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं जो रक्षा मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय से सम्बन्ध रखती है। मैं जब अपने निर्वाचन-क्षत्र साबरकंठा गई थी तभी वहां उसका पता चला। 13 तारीख को एक देहात में जिसका नाम हांसलपुर है, एन० सी० सी० की प्रैक्टिस हो रही थी। उसके सम्बन्ध में वहां पर जो प्रिकाशन्स लिये जाने चाहिये थे वह नहीं लिए गए थे। इसके परिणामस्वरूप 13 तारीख को एक खेत में एक बैल मर गया। इस घटना के पश्चात् वहां के लोग हिम्मत नगर गए, वहां पर बताया लेकिन फिर भी उसके बारे में कुछ नहीं किया गया।

दूसरे दिन 14 तारीख को उसी खेत में एक चरवाहे को उसके घुटने के आस-पास गोली लगी। उसको लेकर लोग फिर हिम्मतनगर गए, पुलिस केस भी किया लेकिन कोई भी कदम नहीं उठाया गया। 15 तारीख को पुनः उसी खेत में एक किसान के जवान लड़के को गोली लगी और वह वहीं पर मर गया। देहात के लोग उसको लेकर हिम्मतनगर गए लेकिन अभीतक उसके मां बाप को किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिली है। 17 तारीख को सुबह जब मैं ने इस घटना के बारे में सुना तो मैं भी वहां पर पहुंची। मैं ने यह सुना कि वहां पर कोई मिनिस्टर आये थे जिनकी सेवा करने में सरकारी कर्मचारी लगे हुए थे इसलिए इस घटना की ओर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। मैं वहां पहुंच कर उस मृतक लड़के की जवान स्त्री और वृद्ध माता पिता के पास गई। मैं उन लोगों को और क्या आश्वासन दे सकती थी, मैंने उस जवान स्त्री के हाथ में एक सौ रुपए का नोट रखा लेकिन वहां के लोग इतने स्वाभिमानी हैं कि उन्होंने उस नोट को मोटर पर वापिस भेज दिया। वे लोग भगवान पर भरोसा रखने वाले हैं। मेरा निवेदन है कि उस किसान परिवार को राज्य सरकार तथा रक्षा मंत्रालय व शिक्षा मंत्रालय की ओर से जो सहायता मिलनी चाहिए उस सम्बन्ध में अभीतक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। कम से कम 17 तारीख तक जब कि मैं वहां गई थी उस परिवार को किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिली है। मेरा निवेदन है कि जब रेल दुर्घटना में मरने वालों के लिए आपने 50 हजार की सहायता देने की व्यवस्था की है तब वहां पर जब आपकी गलती से एक व्यक्ति की जान चली गई है क्या उसके परिवार को यह सहायता करना आपका दायित्व नहीं है? मेरा निवेदन है कि इस सम्बन्ध में जो कदम उठाना चाहिए यह अभी तक नहीं उठाया गया है इसलिए वह लड़का जो मर गया है उसके परिवार को सहायता देने के लिए तुरन्त कार्यवाही करनी चाहिए।